15

मसीह, कलीसिया का सिर

एक पुरानी कहानी है कि लड़कों की एक टोली भागी-भागी एक दुकान में गई। उन्होंने कुछ चीज़ें खरीदीं और वहां से चले गए। कुछ ही मिनटों में वे वहां से ओझल हो गए। कुछ देर के बाद, एक और लड़का दुकान पर भागा-भागा आया और दुकानदार से पूछने लगा, ''क्या आपने लड़कों की एक टोली इधर से जाते देखी है?'' दुकानदार ने उत्तर दिया, ''हां। अभी पन्द्रह मिनट पहले वे यहां आए थे। वे बड़ी जल्दी में थे।'' लड़के ने कहा, ''वे किस तरफ गए हैं? मैं उनका नेता हूं!''

यह लड़का उस नेतृत्व का एक उदाहरण है जिसे हम सब ने अक्सर देखा है- ऐसी अगुआई जिसका नेतृत्व आगे से नहीं बल्कि पीछे होता है। हैरानी होती है कि उसके अनुयायी किस रास्ते पर चले गए? मानवीय अगुआई की समस्या इसकी दुर्बलताएं और त्रुटियां हैं। मानवीय अगुआई कभी न कभी निराशा का कारण बनती है। लोग तो हमेशा भविष्य में भी लोग ही रहेंगे।

क्या कलीसिया में भी कभी-कभी कमज़ोर नेतृत्व होता है? क्या स्वर्ग की ओर जाने वाले जहाज़ का कप्तान ऐसा है जो मानवीय दुर्बलताओं और असफलताओं में जकड़ा हुआ है? जबकि कलीसिया को इस पृथ्वी से अपना सफ़र शुरू कर उस अनन्त छोर तक जाना है, तो क्या इसके सदस्यों को टूटे हुए दिशासूचक पर निर्भर रहना चाहिए?

ऐसी बातों का भय आत्मा की प्रेरणा से दिये वचन कम कर देते हैं, जो कहते हैं कि कलीसिया का सिर यीशु मसीह के अलावा और कोई नहीं है। पौलुस ने लिखा, ''मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है'' (इफिसियों 5:23-25)। वह कलीसिया का सिर है क्योंकि उसने इससे प्रेम किया और इसके

लिए मरा। यीशु के पास अपने महान बलिदान के कारण कलीसिया की अगुआई करने का अधिकार है। वाक्यांश ''मसीह भी कलीसिया का सिर है'' को अपनी सोच में गहराई से बसने दें। कलीसिया के सिर मसीह को देखकर उनको आश्वासन मिलता है जो मसीह की कलीसिया के सदस्य हैं, क्योंकि यह उनको स्मरण दिलाता है कि जो अगुआई उनको मिलती है, वह अचूक है। गैर मसीहियों के लिए भी कलीसिया में प्रवेश का यह कारण होना चाहिए ताकि वे भी मसीह की अचूक अगुआई के अधीन आ सकें।

आइए ''मसीह, कलीसिया का सिर'' के विषय को सुनिश्चित करने वाली बातों पर चिन्तन करें, वैसे ही जैसे वह कलीसिया का सिर है।

वह अधिकार में सिर है

पहला, मसीह अधिकार में कलीसिया का सिर है। वह प्रभु है, और वह अपनी व्यवस्था से इसकी अगुआई करता है।

मुर्दों में से जी उठने और स्वर्ग में उठाए जाने के बाद, मसीह को स्वर्गीय स्थानों पर परमेश्वर के दाहिने हाथ ''सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आने वाले लोक में भी लिया जाएगा, बिठाया'' गया (इफिसियों 1:21)। परमेश्वर ने, ''सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया; और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है ...'' (इफिसियों 1:22, 23)। पौलुस ने कुलुस्सियों में भी इस सच्चाई पर ज़ोर दिया, जब उसने कहा, ''वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा है कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे'' (कुलुस्सियों 1:18, 19)। इब्रानियों के लेखक के अनुसार, अन्त के दिनों, अर्थात मसीही व्यवस्था में परमेश्वर हमारे साथ अपने पुत्र के द्वारा ही बात करेगा (इब्रानियों 1:1, 2)। उसने यीशु को इतनी महिमा दी और उसे वह नाम दिया है जो सब नामों से ऊंचा है, ''कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और ... हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है'' (फिलिप्पियों 2:10, 11)। बाइबल आश्वासन देती है कि मसीह कलीसिया के सिर अर्थात राज्य के राजा के रूप में अन्त तक शासन करेगा, और फिर, जब सारी प्रधानता, और सारे अधिकारों, और सामर्थ का अन्त हो जाएगा, तो वह राज्य को

परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप देगा (1 कुरिन्थियों 15:23, 24)।

यीशु की कलीसिया उसके अधिकार और अगुआई में रहती है। ''मैं'' पर केन्द्रित ज़माने में भी, मसीह की कलीसिया के लोग अपने ढंग की मांग नहीं कर सकते। वे ''पहले मैं'' कहने के साथ ही यीशु को प्रभु नहीं कह सकते। हर एक निर्णय जो एक मसीही लेता है वह एक आत्मिक निर्णय है; और वह उसके प्रभुत्व की आज्ञाकारिता में होता है।

वह उदाहरण में सिर है

दूसरा, मसीह उदाहरण में कलीसिया का सिर है। परमेश्वर की आज्ञाकारिता के लिए वह सज़्पूर्ण नमूना है। और वह अपने निष्पाप जीवन से अगुआई करता है।

पतरस ने कहा कि मसीह ने कोई पाप नहीं किया, और न उसके मुंह से छल की बात निकली। जब उसे गाली दी गई, तो उसने गाली का जवाब गाली नहीं दिया। दुख उठाकर उसने किसी को धमकी नहीं दी (1 पतरस 2:21-23)।

यीशु ने कभी कोई ऐसी गलती नहीं की, जिसके लिए उसे माफ़ी मांगनी पड़ी हो। न कभी उसे अपशब्द बोलने पर उन्हें वापिस लेने की आवश्यकता ही पड़ी। उसके दिल में कभी कोई बुरा विचार नहीं आया। उसके शत्रु उसके जीवन पर नज़र रखते थे परन्तु उन्हें उसमें कभी भी पाप न मिला।

वह चाहता है कि हम भी वैसा ही जीवन व्यतीत करें- सच्चा, शुद्ध और आदरयोग्य (फिलिप्पियों 4:8)। याकूब ने लिखा, ''... क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर, और फंसकर परीक्षा में पड़ता है'' (याकूब 1:13, 14)। हमारा ''विरोधी'' मसीह नहीं, बल्कि शैतान है, जिसे मत्ती 4:3 में ''परखने वाला'' कहा गया है। वह गर्जने वाले सिंह की नाईं इस खोज में रहता है कि कब किस को फाड़ खाए (1 पतरस 5:8)। वह हमारी कमज़ोरियों का लाभ उठाना चाहता है।

मसीह भी हमारी कमज़ोरियों को जानता है। हमारे जीवन में आने वाले संघर्षों को वह समझता है। उसे भी, उस परखने वाले, अर्थात शैतान का सामना करना पड़ा था, परन्तु उसने पाप नहीं किया (इब्रानियों 4:15)। वह हमें परीक्षा में नहीं डालता; बल्कि पाप से बचने के लिए, उन परीक्षाओं से बचाते हुए जिन्हें हम सहन नहीं कर

सकते, रास्ता भी निकाल देता है (1 कुरिन्थियों 10:13)।

कलीसिया का सिर स्वभाव में सज़्पूर्ण है, बिल्कुल वैसे ही जैसे वह अधिकार में सज़्पूर्ण है। उसकी कलीसिया को चाहिए कि उसकी आज्ञाओं को माने और उसके जीवन की नकल करे। पहला यूहन्ना 2:6 कहता है, ''जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूं, उसे चाहिए, कि आप ज़ी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।'' कलीसिया को यीशु की विलक्षण अगुआई के कारण, पौलुस औरों को आदेश दे सकता था, ''तुम मेरी सी चाल चलो - जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूं'' (1 कुरिन्थियों 11:1)।

एक दृष्टिकोण से, मसीह हमारा सज़्पूर्ण मुक्तिदाता *बना*। परमेश्वर के सामने सज़्पूर्ण जीवन जी कर, हमारा मुक्तिदाता होने के लिए सज़्पूर्ण तौर पर योग्य बना और पाप के प्रायश्चित (दाम) के लिए परमेश्वर के सामने निष्पाप जीवन भेंट कर सका। इब्रानियों के लेखक ने कहा ''और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा-उठा कर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया'' (इब्रानियों 5:8, 9)।

नथानियेल हाथर्ओन ने ''द ग्रेट स्टोन फेस'' (पत्थर का विशाल चेहरा) कहानी लिखी जो हमें स्मरण दिलाती है कि जो हम देखते हैं, वही हो जाते हैं और जिसकी प्रशंसा करते हैं उसकी हम नकल करते हैं। पहाड़ को एक ओर से तराश कर, एक करुणामय चेहरा बनाया हुआ था जो घाटी में स्थित एक गांव की ओर देखता था, जिसमें उत्पीड़ित लोग रहते थे। वहां रहने वाले लोगों का विश्वास था कि एक दिन उस विशाल पत्थर के चेहरे के जैसा कोई व्यक्ति उनको मुक्त कराने वाला बनकर आएगा। उस गांव का एक लड़का पत्थर के उस चेहरे के बारे में हमेशा आकांक्षा और अभिलाषा से विचार करता रहता था। पत्थर के चेहरे को देखते और निहारते, समय बीतने पर, वह युवक उस चेहरे के जैसा हो गया, और लोगों ने शीघ्र ही उसे अपने छुड़ाने वाले के रूप में मान लिया।

यह सच्चाई कि जिसे हम देखते हैं उसी के जैसे बन जाते हैं विशेषकर कलीसिया के लिए सच है। पौलुस ने कहा, ''परन्तु जब हम सबके उघाड़े चेहरे से प्रभु का प्रताप इस प्रकार प्रकट होता है, जिस प्रकार दर्पण में, तो प्रभु के द्वारा जो आत्मा है, हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते हैं'' (2 कुरिन्थियों 3:18)।

मसीह की कलीसिया जीने के लिए उसके जीवन को नमूने के रूप में देखती है। उदाहरण में वह हमारा सिर है। इसके सदस्य केवल उसकी ओर देखते ही नहीं,

बल्कि उसकी ओर ताकते भी हैं (इब्रानियों 12:2) क्योंकि वह हमेशा अपने सम्पूर्ण जीवन से कलीसिया की अगुआई करता है।

वह प्रेम में सिर है

तीसरा, मसीह प्रेम में कलीसिया का सिर है। वह अपने अद्‌भुत प्रेम से अपने लोगों की अगुआई करता और उन्हें आदेश देता है।

अपनी मृत्यु की पूर्व संध्या पर, यीशु ने अपने चेलों को बताया, ''मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो; *जैसा मैंने तुमसे प्रेम रखा* है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो'' (यूहन्ना 13:34, 35)। उसने उन्हें और बताया, ''मेरी आज्ञा यह है, कि *जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा,* वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो'' (यूहन्ना 15:12)।

यह प्रेम, जो मसीह लोगों के लिए दिखाता है, उसके अनुयायियों की तीन प्रकार से अगुआई करता है। पहला, इसके कारण वे *उससे प्रेम* करते हैं। यूहन्ना ने कहा, ''हम इसलिए प्रेम करते हैं, कि पहिले उस ने हम से प्रेम किया'' (1 यूहन्ना 4:19)। दूसरा, उसके प्रेम के कारण मसीही लोग *एक दूसरे से प्रेम करते हैं*। यूहन्ना ने लिखा, ''हमने प्रेम इसी से जाना, कि उसने हमारे लिए अपने प्राण दे दिए; और हमें भी भाइयों के लिए प्राण देना चाहिए'' (1 यूहन्ना 3:16)। तीसरा, उसके प्रेम के कारण उसके अनुयायी उसकी *इच्छा को पूरा करते* हैं। मसीह ने कहा, ''यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे'' (यूहन्ना 14:15)।

स्वर्गदूत पृथ्वी पर मसीह की सेवकाई को देखकर, अवश्य ही विस्मित होते होंगे। क्रूस पर अपनी मृत्यु से एक दिन पहले, उसने बर्तन और तौलिया लिया, और प्रेम और नम्रता से अपने चेलों के पैर धोए! राजाओं का राजा अपने चेलों के सामने स्नेहपूर्वक सेवा में झुक गया। मसीह केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि मनुष्यों का दास बना। वह मनुष्य के रूप में आया और उसने एक दास का जीवन व्यतीत किया (फिलिप्पियों 2:7)।

यूहन्ना ने इस महत्वपूर्ण दृश्य को इन शब्दों में प्रस्तुत किया: ''यीशु ने यह जानकर कि पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है और मैं परमेश्वर के पास से आया हूं, और परमेश्वर के पास जाता हूं'' (यूहन्ना 13:3)। अन्य शब्दों में, उस

समय जब मसीह विशेषकर अपने अधिकार, स्थिति, और भविष्य के बारे में सचेत था, उसने एक दास का जीवन जी कर एक दास का काम करने के लिए अपने आप को नीचा किया। उसने अपने प्रभुत्व और सामर्थ, अपनी शक्ति और पद का प्रदर्शन नहीं किया। उसने अपने चेलों को विनम्रता की शिक्षा देने के लिए प्रेम के कारण इसका उपयोग किया।

कलीसिया का सिर होकर, वह प्रेम से अपनी शक्ति और अधिकार से इसकी सेवा करता है। उसने चेलों के पैर धोते समय अपने प्रभु होने के पद का त्याग नहीं किया; उसने उनकी सेवा करने और उनमें सेवा का मन बनाने के लिए प्रभु की अपनी पदवी का उपयोग किया, उसने उनसे कहा, ''तुम मुझे गुरु, और प्रभु कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं। यदि मैंने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें भी एक-दूसरे के पांव धोने चाहिए। क्योंकि मैंने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसे मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो'' (यूहन्ना 13:13-15)।

यीशु ने अति सरल ढंग से चित्रित किया कि प्रेम क्या है और सच्चे प्रेम को कैसे दिखाया जाता है। वह अपने प्रेम से अपनी कलीसिया की अगुआई करता है। जब मसीही लोग उसके प्रेम के वातावरण में रहते हैं, सांस लेते हैं, और उत्तर देते हैं, तो उन्हें उसके स्वरूप में फिर से बनाया जाता है। यूहन्ना ने कहा, ''हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि परमेश्वर प्रेम है: और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है'' (1 यूहन्ना 4:7, 8)।

सारांश

निश्चय ही, मसीह अधिकार में, उदाहरण में, और प्रेम तथा सेवा में कलीसिया का सिर है। वह अपने प्रभुत्व के द्वारा, अपने सज़्पूर्ण जीवन के द्वारा और सज़्मोहक प्रेम के द्वारा अपनी कलीसिया की अगुआई करता है।

किसी भी संगठन या देह के सिर को चाहिए कि जिस संगठन या देह की वह अगुआई करे, उसे वह अपनी विश्वसनीयता, प्रामाणिकता और बल जो उसके पास है, दे। निस्संदेह यह मसीह और कलीसिया के लिए सत्य है। मसीह, परमेश्वर का पुत्र, कलीसिया का सिर होने और अपनी अगुआई से कलीसिया को अपनी बेदाग सज़्पूर्णता, असीम बुद्धि, अनुपम पूर्णता, और शक्तिशाली सामर्थ देता है।

मसीह की कलीसिया की स्थापना मसीह के द्वारा हुई, मसीह इसकी अगुआई करता है और इसे मसीह का नाम मिला है। जो कुछ मसीह के पास है, वह उसे अपनी कलीसिया को देता है; जो भविष्य मसीह का है, वही कलीसिया का है। वह अपनी कलीसिया को स्थिर रखने और उसके भविष्य के लिए उसे पवित्र करने का वायदा करता है, ताकि ''उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो'' (इफिसियों 5:27)।

यदि मसीह ने कलीसिया को बनाया है, उसे अपना प्रेम और उद्धार दिया है, और कलीसिया को अनन्त महिमा से सुशोभित किया है, तो कौन उसकी कलीसिया में शामिल न होना चाहेगा?

क्या आप मसीह की अगुआई वाली कलीसिया के सदस्य हैं?

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 241 पर)

1. ऐसे नेतृत्व का उदाहरण दें जो असल में अगुआई करता नहीं?
2. मसीह अधिकार में कलीसिया का सिर कैसे है? बाइबल के हवाले बताएं जो सिखाते हैं कि यीशु के पास सारा अधिकार है?
3. मसीह ने कलीसिया के सिर के रूप में कब तक शासन करना है? (देखिए 1 कुरिन्थियों 15:23-25)।
4. यीशु हमारा सिद्ध उद्धारकर्त्ता कैसे बना? (देखिए इब्रानियों 5:8, 9)।
5. मसीह की ओर मनपरिवर्तन होना एक समय में होने वाली घटना है, परन्तु उसके रूप में ढलने के लिए समय चाहिए। उसमें ढलने की इस प्रक्रिया पर चर्चा करें (देखिए 2 कुरिन्थियों 3:18)।
6. मसीह के द्वारा चेलों के पांव धोने से हमारे लिए प्रतिदिन मसीह के लिए जीने में क्या शिक्षा है?
7. मसीही लोग कैसे ''एक दूसरे के पांव धोते हैं?''